South Eastern Railway
Serving customers with a smile



उड़ान

श्रेत्रिय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान
दक्षिण पूर्व रेलवे , सीनी

वर्ष 2023 अंक 2





`

प्राचार्य की कलम से

माननीय पाठकगण,

क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान, सीनी अपने स्थापना काल से ही दक्षिण पूर्व रेलवे के प्रशिक्षुओं को उत्कृष्ठ प्रशिक्षण देता आ रहा है। कर्मचारियों के ज्ञान और कौशल में वृद्धि हेतु यह संस्थान नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करता है। हमारा लक्ष्य इस संस्थान की उत्कृष्ठता बनाय रखने के साथ–साथ प्रशिक्षुओं का सर्वागीण विकास करना है।

संस्थान में आने वाले प्रशिक्षुओं को उत्कृष्ठ प्रशिक्षण देने के साथ ही उनकी छुपी हुई प्रतिभा को उभारने हेतु संस्थान '' उड़ान '' नाम से एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन करता है जिसमें प्रशिक्षुओं की भावनाओं को उजागर करने हेतु कविता, कहानी यात्रा वृतांत आदि प्रकाशित किया जाता है।

संस्थान के वर्तमान परिवीक्षाधीन प्रशिक्षुओं एवं कर्मचारियों की साहित्यिक अभिव्यक्ति के रूप में ''उड़ान'' का यह द्वितीय त्रैमासिक अंक प्रस्तुत है। आशा है आप उदार मन से उन्हें प्रोत्साहित करेंगे। पत्रिका में आपकी रचनाओं का भी स्वागत है। पत्रिका के निर्माण में उप प्राचार्य श्री जे0 अली का मार्गदर्शन एवं हिन्दी सचिव श्री संतोष कुमार दुबे का योगदान सराहनीय है। अंत मैं आपके सहयोग की कामना के साथ आप सभी को हार्दिक शुभकामनाए देता हूँ।

(अवतार सिंह)
प्राचार्य, क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान
दक्षिण पूर्व रेलवे, सीनी

भारतीय रेल

सभी के लिए उपयोगी
कुदरत का हर खेल निराला है।
मनुष्य भी अजूबों का निर्माता है
एक ने फूलों में रंग भर
पक्षियों को पूरा आसमां दे दिया
इंसानों ने अपनी बुद्धि से
चाँद पर जमीन खरीद लिया
क्या खूब तरकीब है निकाला
दूनिया को मशीनों में कैद कर डाला
पूरब से पश्चिम
उत्तर से दक्षिण को
पटरियों से घेर
सभी के जी को जीत लिया
दुनिया में अनेक वाहन है परन्तु
सबसे सुविधा रेलवे में पायी जाती है।
इंसान– जन्तु–वस्तु–वाहन–मिसाइल
हर एक चीज ले जायी जाती है
लखपति, करोड़पति या हो राहगीर
सब इसमें चढ़ पाते हैं।
परिस्थिति कोई भी हो।
सुविधा प्रत्येक लोग उठाते हैं।

सुरेश महतो
Pro-GTM/01/2023 सीनी
पूर्व तट रेलवे
खोरधा रोड मंडल

ZRTI का लक्ष्य

'' हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए,''
इस ZRTI से एक और गंगा निकलनी चाहिए
हंगामा फैलाना हमारा मकसद नहीं है,
ZRTI की कोशिश है हर सूरत बदलनी चाहिए।। ''

'' वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या , ''
जिस पथ पर बिखरे शूल ना हो'
नाविक की धैर्य कुशलता क्या
यदि धाराए प्रतिकुल न हो ।। ''

'' पक्ष होना चाहिए प्रतिपक्ष होना चाहिए ''
आवरण संग आचरण भी स्वच्छ होना चाहिए
सिर्फ बातों से हालात नहीं बदलते है,
अपने लक्ष्य के लिए हर वक्त निष्पक्ष होना चाहिए।। ''

बन्द किस्मत के लिए को ताली नहीं होती,
सूखे उम्मीदों की कोई हरी डाली नहीं होती,
जो खुद दिन रात किताबों से लड़ जाता है,
फिर सफलता को रोक ले ऐसी कोई जाली नहीं होती ।। ''

अखिलेष कुमार
फतेहपुर उ0प्र0
बैच संख्या–07/22
पद–स्टेषन मास्टर

बढ़ती महँगाई

ऐसा समय अब आ गया है,
जैसे सस्ती को कोई खा गया है।
दाने गिनकर दाल मिलेगें,
गेहूँ के बस छाल मिलंगे।
पानी के इंजेक्शन होंगे।
घोषित रोज इलेक्शन होंगे।
हलवाई हैरान मिलेंगे,
बिन चीनी मिष्ठान मिलेंगे,
जलने वाला खेत मिलेगा,
बस मिट्टी का तेल मिलेगा।
आने वाली पीढ़ी को ,
शीशी में पेट्रोल मिलेगा।
ना सुभाष, ना गाँधी होंगे,
खादी में अपराधी होंगे।
जनता गूँगी, बहरी होगी,
बेबस न्याय कचहरी होगी।
घरो–घरों में फैक्स मिलेंगे,
साँसों पर भी टैक्स लगेंगे,
प्यासों की भी रैली होगी,
गंगा बिल्कुल मैली होगी।
आने वाली पीढ़ी को,
एक नया गणतंत्र मिलेगा।
ऐसा समय अब आ गया है,
जैसे सस्ती को कोई खा गया है।

पूजा भारती
(Pro- SM, 01/23 'A')

पटरी की आपबीती

क्या किस्मत मैंने पायी है।
कोई सलाम तो कोई शिकायत करता है।
कभी जनती माँ नया जीवन
कभी आँसुओं से रक्त धोती है
हर रोज हजारो कहानियाँ
मुझ पर से गुजरती है
कोई हँसता है,
कोई रोता है
कोई इंतजार में पल–पल गिनता है।
सबको अपने मंजिल तक ले जाती हूँ।
और फिर पल में अकेली हो जाती हूँ।
और खुद में हुकती रहती हूँ।
उन खून के धब्बों को देख
जो मेरे छाती से चिपके रहते हैं।
बारिश की बूँद भले ही उन्हें धो डालती है
पर नासूर मेरे सीने में आजीवन रहती है।
कोई तो मेरी अनकही सुन लो
न जाने गलती किसकी होती है
लोग मुझे ही कोसते हैं।

सुरेष महतो
PRO/GTM/01/2023 SINI
खोरधा रोड मंडल
पूर्व तट रेलवे।

बचपन

सच लगता था जब चंदा मामा बुलाते थे,
लगता था अब आऐंगे पर कभी नहीं वो आते थे।
नहलाती थी माँ, हम दाँत कटकटाते थे
फिर क्या रोते–रोते हम मुस्कुराते थे।
याद है खेलते–खेलते कहीं भी सो जाते थे,
पर सवेरे खुद को बिस्तर में ही पाते थे।
आज मैं बड़ा हो गया, अपने पैरों पर खड़ा हो गया।
कमाता हूँ खूब पैसा, पर जीना चाहती हूँ बचपन जैसा।
बचपन की समझदारी अच्छी नहीं लगती,
आज की दुनियादारी अच्छी नहीं लगती।
कोई मुझे वो दिन लौटा दो,
मेरे सपनों का वो बचपन लौटा दो।

उत्तम कुमार
Pro- SM Spl. 01/23
Roll – 67
CKP मंडल

ब्रेक यान और गार्ड /ट्रेन मैनेजर (TM)

लोहे के घर देखों
इसमें बैठे मैनेजर
सर्दी–गर्मी वर्षा में
कार्य कर रहे जो डटकर।
पौन दो सौ वर्ष का
यही है स्वर्णिम इतिहास
दुनिया भर में पहुँचा पर
यहाँ नहीं पहुँचा विकास।
बिना पानी, बिना बिजली
बिना शौचालय का दफ्तर
बिल्कुल अदभुत है इसका
इक्कीसवी सदी का सफर।
सफाई की ना व्यवस्था
न बैठने का उचित आसन
पौने दो सौ वर्षो से
मिल रहा मात्र आश्वासन।
सदा हर एक परिस्थिति में
अकेला ही ये ढोता है।
भोजन जल ये मैनेजर
स्वयं का आप होता है
घरों में आपके जो आवश्यक
सामान है आते
यही मैनेजर है दिन–रात
गाड़ी से पहुँचाते।
भरे परिवार बच्चों से
इन्हें बस दूर ही रहना
कहे कोई दिखे उनको
बस जय हिन्द तुम कहना ।
जय हिन्द तुम कहना।।

सुरेष महतो
Pro/GTM/01/2023 सीनी
पूर्व तट रेलवे
खोरधा रोड मंडल

कर्ज–ए–वतन

खुश नसीब खुद हो पाऊँगा,
अगर वतन के काम आऊँगा।
कुछ कर्ज है, वतन का मुझपर,
कर्ज चुकाता जाऊँगा।
अगर बलिदान की नौबत आई
बलिदान देता जाऊँगा।
खुश नसीब खुद हो पाऊँगा,
अगर वतन के काम आऊँगा।

आज कल जो कोई शक्ति,
हमें आँख दिखाती, डराती है।
वो गाँठ बाँध कर जान ले,
हमें आँख निकालनी भी आती है।
शांतिप्रिय देशवासी है हम,
अगर शांति भंग पाऊँगा,
फिर तुम्हें औकात दिखाने,
तेरे घर में भी घुस जाऊँगा।।
कराची से बीजींग तक,
तिरंगा लहराऊँगा,
खुशनसीब खुद को पाऊँगा,
अगर वतन के काम आऊँगा।।

तुम्हारी इन शातिर चलों की,
जबसे उत्तर दी जाएगी,
फिर तो तुम यह जान लो,
अम्मा ही खैर मनाएगी,
और यह पुरी दुनिया,

बस देखती रह जाएगी।
आनेवाली पीढ़ी भी बस
इतिहास में ही पढ़ पाएगी।
आधे गोले–बारूद तेरे,
मैं खुद ही खा जाऊँगा,
और ज्यादा क्या लिखू
समय पर दिखलाऊँगा,
खुशनसीब खुद को पाऊँगा,
अगर वतन के काम आऊँगा।।

कुमार शुभम्
Pro- SM
बैच– SPL 01/23
रौल – 73

बेटी

चिड़िया होती है, लड़कियाँ.....

मगर पंख नहीं होते लड़कियों के .....

मायके भी होते हैं

ससुराल भी होते हैं,

मगर घर नहीं होते लड़कियों के .....

मायका कहता है, ये बिटियाँ तो पराई है।

ससुराल कहना है, ये पराये घर से आई है।।

हे भगवान अब तू ही बता....

आखिर ये बेटियाँ किस घर के लिए बनाई है।

प्रीतम कुमार
रौल – 35
प्रो SM
बैच SM SP/01/23

नारी हित्व

सत् युग की ना, द्वापर की ना , त्रेता की तुम नारी हो,
कलयुग में विज्ञान के दम पर संघर्षशील तुम नारी हो,
समाज व मजहब तुम मत देखों खुद को काबिल बना लेना,
अपने पैरों पर खड़े होकर जीवन जीने की तैयारी हो,
सतयुग में ना, द्वापर की ना, त्रेता की तुम नारी हो ।
प्रेम करो अगाध करो सपनों को अपने सजोओ तुम,
जाति धर्म से जुड़कर अपने रिश्तों को सीचों तुम
बुरी निगाहें उठे किसी पर उन आँखों को नोचो तुम,
संविधान को आधार मानकर अब लड़ने की तैयारी हो
सत युग की ना, द्वापर की ना, त्रेता की तुम नारी हो
कलयुग में विज्ञान के दम पर संघर्षशील तुम नारी हो।
रश्मो संग अपना तुमको संविधान बचाकर रखना है,
अपनी गरिमा के संग तुमको पुरूष सम्मान बचाकर रखना है,
जीवन में हो कष्ट अगर तो खुद पर धैर्य बनाकर रखना है,
प्रतिष्ठा के खातिर लड़ने वाली भारत देश की नारी हो,
सतयुग की ना, द्वापर की ना त्रेता की तुम नारी हो
कलयुग में विज्ञान के दम पर संघर्षशील युग तुम नारी हो।

कथन – छोटो को प्यार दे बड़ो का सम्मान करे, अपना व्यक्तित्व ''
ऐसा विकसित करे की महिलाए खुद को सुरक्षित महसूस करें।

अखिलेष कुमार
फतेहपुर उ0प्र0
बैच संख्या–07/22
पद–स्टेषन मास्टर

गधे और बैल की दोस्ती

(एक किसान था जो जानवरों की भाषा समझ सकता था)

''यह किसान, जो जानवरों की भाषा समझ सकता था, हर शाम में खेत में रूकता था ताकि उनको बोलते हुए सुन सके। एक शाम उसने एक बैल को एक गधे से अपने काम की शिकायत करते हुए सुना – मैं सुबह से लेकर रात तक हल जोतता हूँ। कितना भी गरम दिन हो मेरे पैर कितने भी थके हो और मेरी गर्दन में कितना भी दर्द हो मैं काम जरूर करता हूँ लेकिन तुम आराम करते रहते हो। तुम एक रंगीन कंबल में लिपटे रहते हो और मालिक के साथ इधर–उधर जाने के अलावा कुछ नहीं करते। जब वह कहीं नहीं जाता तुम आराम करते हो और सारा दिन हरी घास खाते हो।

यह गधा अपने खतरनाक पैरों के बावजूद एक अच्छे दिल का जानवर था और उसे बैल से सहानुभूति हुई। 'मेरे अच्छे दोस्त' उसने जवाब दिया – '' तुम बहुत मेहनत करते हो और मैं तुम्हें आराम दिलाना चाहता हूँ। इसलिए मैं तुम्हें बताऊँगा कि कैसे आराम किया जाए। सुबह में जब गुलाम तुम्हें जोतने के लिए आए तो ऐसे आवाज करना मानो तुम बीमार तो और काम नहीं कर सकते। ''

''इसलिए बैल ने गधे की सलाह ली और अगली सुबह गुलाम ने किसान के पास पहूँचकर बताया कि बैल बीमार था और खेत नहीं जोत सकता था। ''

'' तब किसान ने कहा – ''गधे को खेत में ले जाओं और उससे खेत को जोतो।''

पुरा दिन वह गधा खेत में काम करता रहा और जब रात में बैल के पास आया तो उसका दिल कड़वाहट से भर गया था।

किसान थोड़ी दूर से तबेले की ओर रूक कर सुनने लगा। बैल ने शुरूआत की। 'तुम मेरे अच्छे दोस्त हो। तुम्हारी सलाह के कारण आज मैं एक दिन आराम कर पाया' और मैं गधे ने जवाब दिया – '' किसी और सीधे आदमी की तरह दोस्त की मदद करने चला था और उसका काम करने पर मजबूर हो गया। और गधे ने गुस्से में कहा और आज से तुम ही हल जोतना क्योंकि मैंने मालिक को गुलाम को यह बोलते सुना है कि अगर तुम फिर बीमार हुए तो वह कसाई को बुला लेगा और मैं चाहता हूँ कि वह बुला ले, क्योंकि तुम आलसी हो। ''

इसके बाद उन दोनों ने कभी बात नहीं मानी।

सीख कहानी से :– अगर तुम अपने दोस्त की मदद करना चाहो तो वह इस तरह से करों कि दोस्त का भार तुम पर न जा आए।

अरविन्द नारायण
रौल – 34
बैच – Spl/02/23

कर्म और फल

कहीं मिलेगी प्रशंसा तो
कहीं चिंता का नकाब मिलेगा
कहीं मिलेगा आर्शीवाद तो
कहीं नफरतों का सैलाब मिलेगा।
तू चल अपने कर्मपथ पर
कर्म कर, फल की चिंता ना कर
जैसा तेरा भाव
वैसा उसका प्रभाव मिलेगा।

सचिन कुमार
Pro- SM-01/23 'A'
रौल – 85

यात्रा वृतांत

शीर्षक – जीवन की उड़ान।

हमारा सौभाग्य है कि, हम कोरोना वायरस महामारी के बाद की आज इस हसीन दुनिया में जीवन का आनंद ले रहे हैं।

कोरोना वायरस आने के बाद पूरे देश में लॉकडाउन की घोषणा हो चुकी थी, सारे देश में उथल–पुथल मची हुई थी। सारे लोगों का मकसद एक ही था। इस महामारी के संकट में किसी तरह अपने घर पहुँचा जाए, जिनको जो सुविधा मिल रही थी, वे उसी तरह जा रहे थे। ट्रेन, बसें, प्लेन, यहाँ तक कि कई लोग खुद की मोटरसाईकिल, साईकिल और पैदल भी निकल गए।

मैं भी निकला था अपने सफर में, थोड़ी सी व्याकुलता एवं घबराहट के साथ, क्योंकि मुझे भी अपनों के पास, अपने घर जाना था। मैं अपने निर्धारित सीट पर जाकर बैठा। मेरे सामने सीट पर एक अकेली लड़की पहले से ही बैठी थी। मैं उस समय ज्यादा ध्यान नहीं दिया कुछ देर बाद ट्रेन खुल चुकी थी और अभी तक वह अकेली बैठी थी। मुझे लगा उसके माता–पिता यहीं कहीं होंगे, लेकिन काफी देर तक कोई नहीं आया। वह ट्रेन की सीट पर बैठकर बस खिडक़ी की ओर एकटक दे रही थी, माने एक पक्षी को पहली बार पिंजरें से बाहर आकर इस दुनिया को देखने का मौका मिला हो। मानों अपना बचपन अपने अंदर समेट कर लाई हो आज हर पल को धीरे–धीरे उसी बचपन की यादों में जीना चाहती हो।

वो चिड़ियों की चहचहाहट के साथ खिल उठती, वह पेड़ों की सरसराहट भरी हवाओं से खुद को हवा की बाहों में समेट कर हवा की तरह बहना चाहती हो। वह रेल की तेज रफ्तार से उस दुनिया में जाना चाहती हो, जहाँ उसे रोकने वाला कोई न हो। उसे अपनी जीवन की सारी ख्वाइशों को जीने का मौका बिना कोई रोक – टोक के दिया जाए।

वह अपनी तरह के लोग जो उनके साथ या बाहर दिखाई देते थे, देखकर मुस्कुराती मानो उसे कोई अपना मिल गया हो। उसे दुनिया देखना था, अपने पंखों को फैलाकर उसे उड़ना था। उसे नहीं पता वह कहाँ जा रही है। मैं उससे कुछ पूछकर –

उसके अंदर के ख्वाहिशों और आँखों की चमक देखकर उससे उसके पीछे के जीवन के चोट या दुख याद नहीं करवाना चाहता था। वह अकेली ज्यादा खुश लग रही थी। वह लोगों के पास जाना या कोई उसके पास आकर बैठने पर सहम जाती। मैंने यह देखकर मन ही मन में उसके साथ कुछ गलत होने का महसूस किया। दोपहर हो चुकी थी, मैंने

खाने के लिए कुछ भोजन निकाला, उस लड़की को अकेला देखकर मैंने खाने को पूछा, लेकिन वो डरकर कुछ बोल ना पाई, उसके चेहरे पर साफ झलक रहा था।

मेरी यात्रा का गंतव्य स्थान आने वाला था, मेरे मन में उसके लिए एक अलग अंदेशा उत्पन्न हो गया था, "वह कौन है, कहाँ जा रहीं है ऐसा क्या हुआ होगा उसके साथ" ये सब जानने की चाहत हो रही थी, लेकिन उसकी अकेलेपन की खुशी कुछ और बयाँ कर रही थी। ट्रेन स्टेशन पर आकर रूकी, सारे यात्री अपने–अपने साजो–सामान के साथ उतर रहें थे, लेकिन वह लड़की अपने सीट पर बैठी बाहर की दुनिया को अपनी नजरों में कैद कर रही थी। ना कोई मंजिल, ना किसी का जिक्र, बस खुद में सिमटी चली जा रही थी। मानों लग रहा था उसकी मंजिल उसी ट्रेन से पूरी दुनिया को देखना था। मैं अपना बैग उठाकर चला, लेकिन मानों मेरा मन पैंरो को उसी के आस–पास जकड़ लिया हो। मैं ट्रेन से नीचे आकर वहीं पर स्थित रेलवे पुलिस स्टेशन में जाकर उसके बारे में बताया, कुछ पुलिस वालों ने जाकर उस लड़की से पूछताछ की। पहली बार में वह डर गई, लेकिन प्यार से पूछने पर पता चला कि उसके माता–पिता बचपन में ही किसी अमीर घर में बेचकर भाग गये और उसके बाद कभी वापस नहीं आयें। लगभग पाँच वर्ष बीत गये।

आज वह लड़की किसी तरह वहाँ की यातनाएँ एवं उत्पीड़न से भागने में कामयाब हुई थी। मानों वह दूसरी दुनिया में आ गई हो, जिसे उसने कई वषों से देखा नहीं था। वहाँ से उसे चाईल्ड होम केयर भेज दिया गया, वहाँ उसे एक नये जीवन मिलने की अनुमति हुई। मैं आराम से अपने घर की ओर चल दिया।

इस देश का दुर्भाग्य है कि आज तक हमें गरीबी, बालश्रम, भ्रूण हत्या और लड़कियों पर होने वाली यातनाएँ, जैसे आसमाजिक कुरीतियों से छुटकारा नहीं मिल पाया है।

नाम : सिकन्दर कुमार
बैच : Pro- SM Spl. 01/23
रौल : 72

हास्य व्यंग्य

बिस्तर से उठकर,
ज्यों ही मैंने ली अंगड़ाई ।
पीछे से धर्मपत्नी ने,
मधुर स्वर में आवाज लगाई ।
बिस्तर तोड़ते रहते हो,
घर की कभी, सुध न आई ।
चाय–पानी की आस त्याग,
मैंने झट बाजार को दौड़ लगाई।
बाजार का भाव भी,
घर के हालात से इतर न थे ।
सब्जी के भाव भी,
मोहतरमा के गुस्से की भांति,
आसमान छूने को बेताब हो रहे थे ।
एक सब्जी वाली से पूछा,
गोभी के इतने भाव क्यों है माई,
उसने कहा लेना है तो लो,
वरना रास्ता नापो भाई ।
ऑफिस को हो रही थी देरी,
जो कुछ मिला लेकर मैंने,
घर की ओर दौड़ लगाई ।
ऑफिस जाकर फाईलों में,
ज्योंहि थी मैंने ध्यान लगाई,
अधिकारी ने बुलाकर मुझको,
जमकर क्लास लगाई ।
काम–धाम कुछ करते नहीं,
यूं कुर्सी मत तोड़ो भाई।

अब खुद को मैंने भी,
सार्वत्रिक नकारा मान लिया,
दुनिया की फितरत को,
भली–भांति पहचान लिया ।
सबको खुश रखना अब,
मेरे बस की बात नहीं,
मैं चाहे जैसा भी होऊँ,
तनिक मुझे परवाह नहीं ।
मित्रों मेरी इस रचना को,
दिल से कभी न लेना,
अच्छी लगी तो ठीक,
वरना मेरा क्या मेरे भाई ।
आगे कुछ नया नहीं हुआ,
वही दिनचर्या मेरे जीवन में आई ।

–उज्जवल कुमार
परिवहन अनुदेषक
ZRTI/ सीनी

एक हकीकत

इसलिए **हिन्दी** नायाब है

छू लो तो **चरण**

अड़ा दो तो **टांग**

धँस जाए तो **पैर**

फिसल जाए तो **पाँव**

आगे बढ़ाना हो तो **कदम**

राह में चिह्न छोड़े तो **पद**

प्रभु के हों तो **पाद**

बाप की हो तो **लात**

गधे की पड़े तो **दुलत्ती**

घुंघश बाँध दो तो **पग**

खाने के लिए **टंगड़ी**

खेलने के लिए **लंगड़ी**

अंग्रेजी में सिर्फ – LEG

–राजेष कुमार साहू
स्टेनो / ZRTI/ सीनी